शिवसेना ने की बीजेपी की तारीफ, कहा- किसान हमेशा ऋणी रहेंगे

मुंबई, 26 जून (आज तक)। भारतीय जनता पार्टी की सहयोगी दल शिवसेना ने किसानों की कर्ज माफी को लेकर महाराष्ट्र सरकार की तारीफ की है। शिवसेना के मुखपत्र सामना के संपादकीय में शिवसेना ने फड़नवीस सरकार की किसानों की कर्ज माफी के लिए तारीफ की है। सामना में लिखा गया है कि राज्य सरकार ने जिस तरह विपक्ष के सभी नेताओं और दूसरे पक्षों से बातचीत कर किसान कर्ज माफी का रास्ता निकाला वो तारीफ के काबिल है। किसान सरकार की सदैव ऋणी रहेंगे। हालांकि संपादकी में कर्ज माफी से राज्य सरकार पर पड़ने वाले बोझ की चिंता पर मुख्यमंत्री की आलोचना भी की।

इसके अलावा शिवसेना ने संपादकीय में कांग्रेस-एनसीपी पर भी किसानों की कर्जमाफी का श्रेय लेने के लिए भी जमकर हमला बोला। संपादकीय में शिवसेना ने कहा की महाराष्ट्र के किसानों की कर्ज मुक्ति की मांग का शिवसेना ने समर्थन किया और कर्ज मुक्ति दिलाने का वचन दिया, जिसे पूरा करने के लिए शिवसेना ने अपनी सरकार से ही झगड़ा किया लेकिन शिवसेना ने अपना पूरा किया। कर्ज माफी से राज्य के 90 लाख किसानों को फायदा मिलेगा जबकि 40 लाख किसान इस कर्ज माफी से वंचित रह जाएंगे। ऐसे किसानों को भी शिवसेना सरकार पर दबाव डालकर न्याय दिलाएगी।

संपादकीय में शिवसेना प्रमुख उद्धव ठाकरे ने महाराष्ट्र में चले किसान आंदोलन के दौरान किसानों पर दर्ज मामलों को पीछे लेने के लिए सरकार का क्या करना है शिवसेना देखेगी ऐसा वचन दिया।

संपादकीय में मुख्यमंत्री फड़नवीस की किसानों की कर्जमाफी से सरकार पर 35 हजार करोड़ रुपये के बोझ को लेकर चिंता पर फटकार लगाई। शिवसेना ने कहा कि राज्य में किसानों की आत्महत्या रोकने के लिए यह कर्ज माफी कुछ भी नहीं।

संपादकीय में शिवसेना ने कहा राज्य चलने के लिए पैसों से ज्यादा जनता की जान का ज्यादा मोल है। रोज मरने वालों की संख्या बढ़ने लगी तो क्या सरकार मुर्दों पर राज करेगी?? उद्धव ने संपादकीय में मुख्यमंत्री को किसानों की कर्ज माफी से पड़ने वाले बोझ को कम करने के लिए बड़ी परियोजनाओं को रद्द करने और विधायकों, सांसदों, वर्तमान और पूर्व मंत्री, महानगरपालिका सदस्यों से सहयोग लेने की सलाह दी।

(बाकी पेज 5 पर)

इंटरकोर्स शब्द पर जनता में वोटिंग चाहता है सेंसर बोर्ड

मुंबई, 26 जून (बीबीसी)। सेंसर बोर्ड के अध्यक्ष पहलाज निहलानी के इम्तियाज अली की अगली फिल्म जब हैरी मैट सेजल के एक प्रोमो पर आपत्ति जताने से एक नया विवाद खड़ा हो गया है।

निहलानी ने शाहरुख खान और अनुष्का शर्मा की फिल्म के प्रोमो में इंटरकोर्स शब्द पर आपत्ति जताई है। टीवी चैनलों से बात करते हुए निहलानी ने कहा कि अगर ये एक पारिवारिक फिल्म है तो इसमें इस शब्द का क्या मतलब है।

निहलानी ने मिरर नाउ से बात करते हुए कहा है कि अगर देश की जनता इस शब्द के फिल्म में रहने पर सहमति जताए तो वह फिल्म को पास कर देंगे। उन्होंने कहा कि अगर एक लाख लोग भी समर्थन में मतदान करते हैं तो वह पूरी फिल्म को पास कर देंगे।

अभिनेता और स्टेंडअप कॉमेडियन वीर दास ने ट्विटर पर लिखा, बच्चों, जब आपके मम्मी-पापा ने बिस्तर पर जाकर कुछ संस्कारी काम किया तब आप पैदा हुए। कोई इंटरकोर्स नहीं हुआ। अपने बायलॉजी टीचर को जाकर ये बताना।

वहीं, एक ट्विटर यूजर कहते हैं कि आप इसे ट्वीट कर सकते हैं, वोट कर सकते हैं लेकिन कह नहीं सकते।

एक अन्य ट्विटर यूजर कहते हैं कि भारत की जनसंख्या जल्द ही दुनिया में सबसे ज़्यादा होने जा रही है और फिर भी हम फिल्म में इसे इस्तेमाल नहीं कर सकते। ये सिर्फ भारत में हो सकता है।

आपातकाल को जानें आज के युवा, स्कूलों में पढ़ाया जाए

वेंकैया नायडू की मांग

नई दिल्ली, 26 जून (आज तक)। भारत के लोकतांत्रिक इतिहास में आपातकाल को सबसे काला अध्याय करार देते हुए केंद्रीय मंत्री वेंकैया नायडू ने इसे एक अध्याय के रूप में स्कूली पाठ्यक्रम में शामिल किए जाने पर जोर दिया। केंद्रीय सूचना और प्रसारण मंत्री ने कहा, आपातकाल ने एक पीढ़ी के मन में ऐतिहासिक छाप छोड़ी है जिसके बारे में जानने को लेकर आज भी उत्सुकता होती है।

यह आज की युवा पीढ़ियों को बमुश्किल ही याद होगा और उनमें से कुछ उस काल के जख्म और यातना की कहानियों को पढ़ सकते हैं। हालांकि चार दशक बीत गए, लेकिन आपातकाल को लोग नहीं भूले और इसे ना ही भुलाया जाना चाहिए और न ही इसे माफ किया जाना चाहिए। उन्होंने कहा, मुझे लगता है कि आपातकाल पर एक अध्याय स्कूल के पाठ्यक्रमों में शामिल होना चाहिए ताकि आज की युवा पीढ़ी इसके बारे में जान सके।

25 जून को आपातकाल को 42 साल भी पूरे हुए थे तो इस अवसर पर पीएम ने मन की बात कार्यक्रम में उस दौर को याद करते हुए कांग्रेस पर बिना नाम लिए निशाना साधा। मोदी ने आपातकाल की भयावहता को दर्शाने के लिए पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी की उस कविता का जिक्र किया जो उन्होंने आपालकाल के एक साल पूरा होने पर जेल में लिखी थी।

पीएम मोदी ने आपातकाल को याद करते हुए कहा कि इन दिनों मन की बात में लगातार जनता की ओर से सुझाव आते रहते हैं। प्रकाश त्रिपाठी ने इमरजेंसी को याद करते हुए मुझे लिखा है कि 25 जून लोकतंत्र के इतिहास में काले कालखंड के रूप में याद किया जाता है। मोदी ने कहा कि लोकतंत्र एक व्यवस्था ही नहीं बल्कि संस्कार भी है।

मोदी ने कहा कि 1975 में 25 जून ऐसी काली रात थी जो कोई भारतवासी भुला नहीं सकता है। तब देश को जेल में बदल दिया गया था और विरोधी स्वर को दबा दिया गया था। न्याय व्यवस्था भी आपातकाल के भयावह रूप से बच नहीं पाई थी। अखबारों को तो बेकार कर दिया गया था। उस समय अटल बिहारी वाजपेयी भी जेल में थे, एक वर्ष पूरे होने पर उन्होंने एक कविता लिखी थी।

PIXTOON छायाव्यंग्य

https://www.facebook.com/DailyChhattisgarh

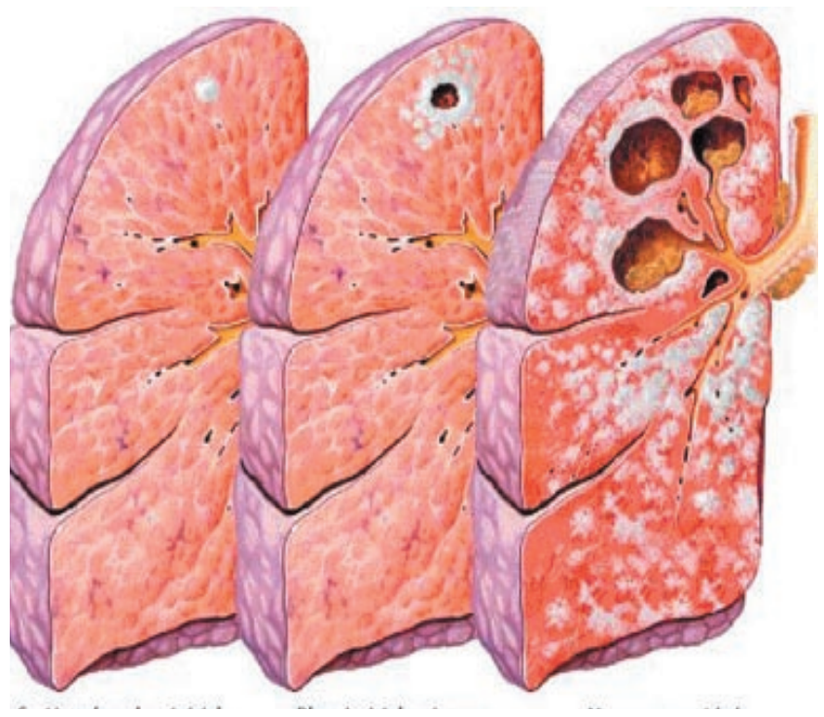

टीबी इंसान के फेंफड़ों को इस तरह धीरे-धीरे खोखला कर देती है।
टीवी इंसान के दिमाग के साथ ऐसा ही करता है...

मुंबई में रहने वाला 15 बरस का अमीरुद्दीन शाह एक वेल्डर का बेटा है। उसने कभी सपने में भी नहीं सोचा था कि वह अमरीका के न्यूयॉर्क के एक विख्यात बैले स्कूल पहुंच जाएगा। दरअसल अमरीका से एक बैले-शिक्षक मुंबई आया हुआ था, और वह वहां के वंचित तबकों के कुछ बच्चों को बैले-नृत्य सिखा रहा था। भारत में नृत्य की इस विधा का कोई चलन नहीं है, और मुंबई के ये बच्चे तो वैसे भी ऐसी किसी ट्रेनिंग की सोच भी नहीं सकते थे। सिखाते-सिखाते इस विख्यात बैले-शिक्षक को इस लड़के में प्रतिभा दिखी, और उसने न्यूयॉर्क के विख्यात जैकलीन कैनेडी ओनासिस स्कूल में उसके सीखने का इंतजाम किया। उसका कहना है कि अमीरुद्दीन पत्थरों के बीच हीरा है। अब मुंबई की झोपड़पट्टी से निकलकर अमीरुद्दीन न्यूयॉर्क में बैले कलाकार बन रहा है, और यह प्रशिक्षण चार बरस चलेगा। उसकी फीस और खर्च के लिए लोग उसकी मदद करने में लगे हुए हैं। वह अपनी टूटी-फूटी अंग्रेजी के साथ न्यूयॉर्क में खुश है, और कला सीखने पर ध्यान लगाए हुए हैं।

ट्रेन में मारे गए जुनैद के गांव में काली पट्टी बांधकर नमाज

नई दिल्ली, 26 जून (आज तक)। पूरे देश में लोग ईद का जश्न मना रहे है। हर जगह खुशी का माहौल है। पर एक जगह ऐसी भी है जहां मातम पसरा हुआ है। नफरती हिंसा का शिकार हुए जुनैद के घर और हरियाणा के उसके गांव में ईद के दिन खुशी नहीं है। परिवार और उसके गांव के लोग मिलकर मौत इंसाफ मांग रहे है। ईदगाह पहुंचे सभी गांव वालों ने बाजुओं पर काली पट्टी बांध कर नमाज अता की और जुनैद की हत्या का विरोध किया।

ये था मामला

जुनैद हाफिज़ गुरुवार की रात लोकल ट्रेन से दिल्ली से बल्लभगढ़ जा रहे थे। उनकी उम्र 16 साल थी। ट्रेन में भीड़ ने पीट-पीट कर मार डाला। हुआ ऐसा कि जुनैद, उनके भाई हाशिम और शाकिर और पड़ोसी दोस्त मोहसिन दिल्ली के सदर बाज़ार से ईद की खरीदारी कर घर लौट रहे थे। जब वो ट्रेन में चढ़े तो ट्रेन पूरी तरह खाली थी, तो उन्हें बैठने के लिए सीट भी मिल गई। आगे चलकर ओखला में 20-25 लोग ट्रेन में चढ़े थे। चढ़ने में धक्का मुक्की हुई। उसी में जुनैद को धक्का लगा तो वो नीचे गिर गए। इस पर जुनैद ने कहा कि धक्के क्यों मार रहे हो।

उन्होंने उनके सर पर टोपी देख कर कहा कि तुम मुसलमान हो, देशद्रोही हो, तुम पाकिस्तानी हो, मांस-मीट खाते हो। उन लोगो ने सर से टोपी हटा दी और उनकी दाढ़ी पकड़ने की कोशिश की। जब उन्होंने रोकने की कोशिश की तो उन्होंने मार-पीट शुरू कर दी।

अगला स्टेशन तुगलकाबाद आने तक वो उन्हें मारते रहे। वहां से उन लोगों ने अपने भाई को फ़ोन किया और मदद के लिए बुलाया। उनके बड़े भाई बल्लभगढ़ स्टेशन पहुंचे। लेकिन बल्लभगढ़ पहुंचने पर उन लोगों ने उन्हें ट्रेन से उतरने नहीं दिया। वो नीचे गिरा कर उनके ऊपर चढ़े गए। जब उनके भाई उन्हें बचाने के लिए ट्रेन पर चढ़े तो उन लोगों ने उन्हें अंदर खींच लिया और उनके साथ भी मार पिटाई की।

बल्लभगढ़ से कुछ लोग ट्रेन से उतरे और यहां से आगे ट्रेन चालू हुई तो उन लोगों ने चाकू निकाल

लिया और शाकिर को मारना शुरू किया। जुनैद ने बीचबचाव किया तो उन्होंने जुनैद को भी मारा। जुनैद को उन्होंने इतना मारा था कि वो नीचे गिर गए। उन्हें लगा कि जुनैद मर गए हैं तो अगले स्टेशन असावटी में उन्हें फेंक दिया। इसके बाद वो ट्रेन की पिछली साइड से उतरे जबकि हम प्लेटफॉर्म से उतरे।

फिर उन लोगों ने एंबुलेंस को फोन किया। जब ओखला से ट्रेन चली थी तो 20-25 ही लोग थे, लेकिन धीरे-धीरे ट्रेन में भीड़ हो गई और उन्हें छोड़ कर पूरा डिब्बा गैर मुसलमानों से भरा था।

(बाकी पेज 5 पर)

तेजस्वी के बयान पर जदयू का सख्त रुख, तो राजद पड़ा नरम

पटना, 26 जून (प्रभात खबर)। राजद नेताओं की ओर से लगातार बयानबाजी पर जदयू ने रविवार को पलटवार किया। जदयू ने साफ कर दिया कि पानी सिर के ऊपर से गुजर रहा है और निर्णय लेने का समय जल्द आयेगा। राजद के नेताओं के साथ-साथ उपमुख्यमंत्री तेजस्वी प्रसाद यादव के बयान को भी जदयू ने गंभीरता से लिया है।

जदयू के प्रदेश अध्यक्ष वशिष्ठ नारायण सिंह ने कहा कि उपमुख्यमंत्री के बयान को पार्टी गंभीरता से ले रही है। अब तक पार्टी स्तर से लोग बयान देते थे, लेकिन जो लोग सरकार में रह कर ऐसा बयान दे रहे हैं, उसे गंभीरता से लिया जायेगा। महागठबंधन के लिए ऐसा बयान उचित नहीं है। उन्होंने कहा कि राष्ट्रपति पद की उम्मीदवारी को लेकर जदयू ने जो निर्णय लिया, उसे स्वीकार करना चाहिए था। जदयू के निर्णय पर बौखलाहट किस बात की है, यह पता नहीं चलता है। राष्ट्रपति पद के लिए प्रणब मुखर्जी की उम्मीदवारी के समय हमने जो फैसला लिया और उस पर कायम भी रहे।

पटना/मोतीपुर, 26 जून (प्रभात खबर)। जदयू के सख्त रुख को देखते हुए उपमुख्यमंत्री तेजस्वी प्रसाद यादव ने रविवार को बीचबचाव की पहल की। उन्होंने कहा कि महागठबंधन हिमालय की तरह अटूट है। उन्होंने राजद नेताओं व कार्यकर्ताओं को नसीहत दी कि वे किसी तरह का बयान देने में संयम बरतें।

बयान देने में संयम बरतें पार्टी नेता -तेजस्वी

उन्होंने कहा कि जदयू की तरफ से अब तक राजद के राष्ट्रीय अध्यक्ष लालू प्रसाद के प्रति कभी भी कोई अप्रिय बयान नहीं आया है। यह महागंठबंधन अटूट है। मालूम हो कि इससे पहले शुक्रवार को तेजस्वी ने मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के बयान पर प्रतिक्रिया देते हुए कहा था कि बिना मैदान में उतरे कैसे कह सकते हैं कि कौन जीतेगा और हारेगा। (बाकी पेज 5 पर)

ऐसे में लोगों ने कैसे समझ लिया कि समझाने-बुझाने और कहने से पार्टी अपना फैसला बदल लेगी। उन्होंने कहा कि जो भी बयान आ रहे हैं, उनमें हैरानी वाली चीजें दिख रही हैं। जिस भाषा का लोग प्रयोग कर रहे हैं, उससे लगता है कि उनका कुछ मन बना हुआ है। वे राष्ट्रपति चुनाव को किस रूप में देख रहे हैं, इस पर हैरानी व आश्चर्य भी हो रहा है। दूसरे लोग भी स्टैंड ले रहे हैं। ओड़िशा के मुख्यमंत्री नवीन पटनायक भाजपा के खिलाफ हैं, लेकिन राष्ट्रपति के लिए एनडीए प्रत्याशी रामनाथ कोविंद का समर्थन किया है। राष्ट्रपति चुनाव को किसी दलीय सीमा में बांधना सही नहीं है। जदयू सभी चीजों पर नजर बनाये हुए हैं और पार्टी इस पर निश्चित रूप से विचार करेगी।

लालू रघुवंश और भाई वीरेंद्र पर क्यों नहीं लगा रहे रोक, नहीं करेंगे बरदाश्त - संजय सिंह जदयू के मुख्य प्रवक्ता सह विधान पार्षद संजय सिंह ने कहा कि राजद नेताओं द्वारा जिस प्रकार महागठबंधन धर्म के खिलाफ (बाकी पेज 5 पर)

जो लोग लगातार अपने स्मार्टफोन से चिपके हुए रात-दिन दिल-दिमाग का सुख-चैन खो बैठे हैं, ऐसे डिजिटल-नशेड़ियों को इस लत से पीछा छुड़ाने के लिए एक नया मोबाइल फोन आया है जो कि खूबसूरत भी है, और सस्ता भी नहीं है। इसमें सिर्फ फोन और एसएमएस की सुविधा है, बाकी कुछ भी नहीं है। और इसका की-पैड भी शुरुआती फोन जैसा है जिसमें एक-एक अक्षर के लिए बटनों को दो-तीन बार दबाना पड़ता है। दुनिया के रईस लोगों में अब प्रतिष्ठा का एक नया प्रतीक सामने आ रहा है कि वे स्मार्टफोन के बिना कम से कम कुछ घंटे तो गुजारते ही हैं। दरअसल स्मार्टफोन लोगों को चौबीसों घंटे का गुलाम बना देता है, और इससे लोगों की जिंदगी पर बहुत बुरा मनोवैज्ञानिक असर पड़ रहा है। लेकिन स्विटजरलैंड की एक कंपनी का बनाया हुआ यह फोन, द पंक्ट एमपी01, सस्ता नहीं है और यह करीब 22 हजार रूपए का है जबकि इन दो फीचरों वाले फोन हजार रूपए से कम भी आ जाते हैं। इसे महंगा रखने के पीछे कंपनी की शायद यह सोच भी है कि इसे मामूली हैसियत के लोग इस्तेमाल नहीं कर सकेंगे, और यह प्रतिष्ठा का प्रतीक बने रहेगा।